पंचम अध्याय

''विवेच्य उपन्यासों की भाषाशैली''

पंचम अध्याय
''विवेच्य उपन्यासों की भाषा-शैली''

प्रस्तावना -

उपन्यास के प्रमुख तत्त्वों में से भाषा-शैली का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा और शैली एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। मूलतः भाषा पारस्पारिक विचार-विनिमय अथवा विचारों और भावों को प्रकट करने का साधन है। भाषा के अलावा हम किसी बात के बारे में विचार भी नहीं कर सकते। अपने मन में जो भी भाव जाग उठता है, उसे भी भाषा के आधार की आवश्यकता होती है। इसके बारे में डॉ. श्याम वर्मा लिखते हैं- ''किसी भी लेखक का उद्देश्य यह होता है कि वह अपने अनुरूप भाव एवं विचार पाठक के मन में जागृत करें। इस प्रक्रिया का माध्यम है भाषा।''[1] अतः कहना सही होगा कि रचनाकार अपने भावों को तथा विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा के माध्यम का ही प्रयोग करता है। मनुष्य शब्दों के माध्यम से ही विचारों को सरलता तथा स्पष्टता के साथ दूसरों के सामने अभिव्यक्त करता है। इन शब्दों को भाषा से वाणी मिलती है, तब उसमें एक शैली भी प्रयुक्त होती है।

भाषा और शैली का गहरा संबंध है। इसके बारे में शामसुंदरदास की मान्यता है कि ''भाषा ऐसे सार्थक शब्द समुहों का नाम है, जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात दूसरों के मन तक पहुँचाने और उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होते हैं। अतएव भाषा का मूल आधार शब्द है, जिन्हें उपयुक्त रीति से प्रयुक्त करने के कौशल को ही शैली का मूल तत्त्व समझना चाहिए।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि भाषा का मूल शब्द पर आधारित होता है और इसे उपयुक्त पद्धति से तथा रीति से प्रस्तुत करने के कौशल को ही शैली कहा जाता है।

---

1. डॉ. श्याम वर्मा - आधुनिक हिंदी गद्य शैली का विकास, पृ. 107
2. शामसुंदर दास - साहित्यलोचन, पृ. 193

अतः कहना आवश्यक नहीं कि भाषा का पेड़ शब्दों के बूते पर खड़ा होकर विचारों का आदान-प्रदान करता है। इसके साथ-साथ विशिष्ट शैली में भी प्रयुक्त होता है।

5.1 भाषा -

भाषा भावाभिव्यक्ति का शक्तिशाली एवं सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा ही साहित्यकार अपने युग को प्रतिबिंबित करता है। जिसमें दो व्यक्ति अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इस कारण रचनाकार पाठकों से संबंध स्थापित कर भाषा को समृद्ध बनाने का प्रयास करता है। इसके बारे में डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त लिखते हैं- ''भाषा उपन्यासकार के हाथों में एक शक्तिशाली उपकरण है। वह शब्द-योजना, वाक्य-संरचना, वाक्य-विन्यास और ध्वनि पैटर्न के प्रयोग द्वारा अपनी बात को विशेष प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित करने में समर्थ होता है।''[1] अतः स्पष्ट होता है कि भाषा उपन्यासकार का शस्त्र है।

यथार्थवादी रचनाकार सर्वश्वरदयाल सक्सेना ने अपने साहित्य में जन भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने व्यापक अध्ययन तथा अनुभवों की वजह से खड़ी बोली के सीमित दायरे को छोड़कर विभिन्न क्षेत्रों और समाज के स्तरों से शब्दों का चयन कर साहित्य को सफल बनाया। अतः हम अध्ययन की सुविधानुसार सर्वेश्वर जी के विवेच्य उपन्यासों की भाषा को दो भागों में विभाजित करते हैं- 1) विविध शब्दों के प्रयोग, 2) भाषा सौंदर्य के साधन ।

5.1.1 विविध शब्दों के प्रयोग -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना यथार्थवादी साहित्यकार हैं। इन्होंने खड़ी बोली के सीमित दायरे के बंधन से दूर होकर साहित्य में जनभाषा को प्रयुक्त किया है। अपनी गहरी अध्ययनशीलता तथा अनुभूतियों से साहित्य में विभिन्न क्षेत्रों के एवं समाज स्तरों से युक्त शब्दों का मार्मिक प्रयोग किया है। इनके 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में प्रयुक्त तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी आदि शब्दों का विवेचन-विश्लेषण इस प्रकार है-

---

1. डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त - उपन्यास : स्वरूप, संरचना तथा शिल्प, पृ. 169

5.1.1.1 तत्सम शब्द -

पात्रों की स्थिति तथा परिवेश के अनुसार भाषा का प्रयोग ही उपन्यासकार की विशेषता रही है, जिसमें भावाभिव्यक्ति तथा परिवेशगत वातावरण मिलता है। सर्वेश्वर जी के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ तत्सम शब्द हैं वे इस प्रकार से - 'क्रोध'[1], 'दालान'[2], 'तन्मयता'[3], 'उत्साह'[4], 'दृष्टा'[5], 'मृत्यु'[6], 'शांति'[7], 'चुनौती'[8], 'जीवन'[9], 'दुख'[10], 'प्रतीक्षा'[11], 'मंडप'[12], 'व्यक्ति'[13], 'शव'[14] आदि।

अतः उक्त शब्द पात्रों के भावों को व्यक्त करते हैं। सर्वेश्वर जी ने प्रस्तुत उपन्यासों में व्यावहारिक तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 5
2. वही, पृ. 9
3. वही, पृ. 11
4. वही, पृ. 15
5. वही, पृ. 23
6. वही, पृ. 36
7. वही, पृ. 43
8. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 10
9. वही, पृ. 13
10. वही, पृ. पृ. 18
11. वही, पृ. 24
12. वही, पृ. 29
13. वही, पृ. 33
14. वही, पृ. 44

5.1.1.2 तद्भव शब्द -

कथा-साहित्य में कथ्य के अनुरूप भाषागत सहजता और स्वाभाविकता लाने के लिए तद्भव शब्दों का प्रयोग आवश्यक होता है। जैसे- 'घर'[1], 'कागज'[2], 'पान'[3], 'गांव'[4], 'सूरज'[5], 'आँख'[6], 'लाल'[7], 'काम'[8], 'नाक'[9], 'हाथ'[10], 'बैंगनी'[11], 'हृदय'[12], 'आग'[13], 'आँसू'[14], 'सेवा'[15] आदि।

अतः उक्त शब्दों द्वारा विवेच्य उपन्यासों की विषय-वस्तु का महत्त्व अधिक ही बढ़ जाता है। उपन्यासों के कथ्य को रोचक, सरल तथा गतिशील बनाने में सर्वेश्वर जी ने तद्भव शब्दों का मार्मिक चित्रण किया है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 5
2. वही, पृ. 8
3. वही, पृ. 12
4. वही, पृ. 13
5. वही, पृ. 16
6. वही, पृ. 21
7. वही, पृ. 22
8. वही, पृ. 34
9. वही, पृ. 55
10. वही, पृ. 84
11. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 11
12. वही, पृ. 17
13. वही, पृ. 18
14. वही, पृ. 34
15. वही, पृ. 46

5.1.1.3 देशज शब्द -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के विवेच्य उपन्यासों में देशज शब्द की भरमार कम-अधिक मात्रा में परिलक्षित है। प्रस्तुत उपन्यासों में प्रयुक्त शब्द इस प्रकार से है- 'भगवान'[1], 'चारपाई'[2], 'बगीचा'[3], 'करवट'[4], 'पत्थर'[5], 'मुँह'[6], 'बीमार'[7], 'पागल'[8], 'परवाह'[9] आदि।

अतः विवेच्य उपन्यासों में देशज शब्दों का प्रयोग मिलता है। जिसे व्यावहारिक रूपों में प्रयोग किया जाता है।

अतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में तत्सम, तद्भव, देशज आदि शब्दों का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। इसके साथ-साथ विवेच्य उपन्यासों में कुछ विदेशी शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। वह इस प्रकार हैं-

5.1.1.4 विदेशी शब्द -

हिंदी साहित्य में स्वतंत्रतापूर्वक काल से विदेशी शब्दों का प्रचलन कम-अधिक मात्रा में हो रहा है। इस बारे में डॉ. हरदेव बाहरी लिखते हैं- "10 वीं - 11 वीं शती से आधुनिक आर्य भाषाओं का काल आरंभ होता है। तभी से लगभग एक सहस्त्राब्दी तक हिंदी प्रदेश पर विदेशी शासन का प्रभाव रहा है। विदेशी शिक्षा, धर्म, संस्कृति और फैशन के साथ विदेशी शब्द भी हिंदी में प्रविष्ट हुए हैं।"[10] अतः कहना गलत नहीं होगा कि विदेशी शासन के प्रभाव से हिंदी

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 20
2. वही, पृ. 21
3. वही, पृ. 23
4. वही, पृ. 48
5. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 11
6. वही, पृ. 13
7. वही, पृ. 14
8. वही, पृ. 17
9. वही, पृ. 26
10. डॉ. हरदेव बाहरी - हिंदी : उद्भव, विकास और रूप, पृ. 137

साहित्य में कम-अधिक मात्रा में विदेशी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इससे सर्वेश्वर जी अपवाद नहीं हैं।

5.1.1.4.1 अरबी शब्द -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के विवेच्य उपन्यासों में अरबी शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त शब्दों के उदाहरण इस प्रकार से- 'दवात'[1], 'बदमाश'[2], 'हलवाई'[3], 'मोहताज़'[4], 'फ़िराक'[5], 'ऐनक'[6], 'कफ़न'[7], 'अहमियत'[8], 'तक़ाज़ा'[9], 'जहन्नुम'[10], 'इबारत'[11], 'कहकहा'[12], 'इश्क'[13], 'मज़ाक'[14], 'क़ीमत'[15], 'सक्री'[16], 'अफ़ीम'[17], 'मौत'[18] आदि। अतः उक्त शब्दों का प्रचलन दैनिक व्यवहार में किया जाता है। उसे विवेच्य उपन्यासों में सर्वेश्वर जी ने प्रस्तुत किया है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 5
2. वही, पृ. 11
3. वही, पृ. 18
4. वही, पृ. 20
5. वही, पृ. 23
6. वही, पृ. 30
7. वही, पृ. 35
8. वही, पृ. 51
9. वही, पृ. 71
10. वही, पृ. 83
11. वही, पृ. 90
12. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 9
13. वही, पृ. 10
14. वही, पृ. 15
15. वही, पृ. 28
16. वही, पृ. 33
17. वही, पृ. 37
18. वही, पृ. 46

5.1.1.4.2 फारसी शब्द -

विवेच्य उपन्यासों में फारसी शब्दों का प्रयोग सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने इस प्रकार किया है : 'रोशनी'[1], 'बीमार'[2], 'शादी'[3], दरवाजा'[4], 'ज़हर'[5], 'ज़बान'[6], 'पोशाक'[7], 'ज़मीन'[8], 'तख्ती'[9], 'नाखून'[10], 'चिलिम'[11], 'किराया'[12], 'रूमाल'[13], 'ताज'[14], 'चाकू'[15], 'शोर'[16], 'गिरह'[17] आदि।

अतः कहना नहीं होगा कि सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में अरबी शब्दों के साथ-साथ फारसी शब्दों का प्रयोग बड़ी मात्रा में किया गया है। विवेच्य उपन्यासों के शब्द व्यवहार से जुड़े हैं। इसे सर्वेश्वर जी ने प्रस्तुत किया है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 9
2. वही, पृ. 14
3. वही, पृ. 16
4. वही, पृ. 20
5. वही, पृ. 24
6. वही, पृ. 30
7. वही, पृ. 43
8. वही, पृ. 47
9. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 5
10. वही, पृ. 8
11. वही, पृ. 12
12. वही, पृ. 19
13. वही, पृ. 26
14. वही, पृ. 47
15. वही, पृ. 50
16. वही, पृ. 54
17. वही, पृ. 62

5.1.1.4.3 अंग्रेजी शब्द -

स्वतंत्रपूर्व तथा स्वतंत्र्योत्तर काल से हमारे देश में अंग्रेजी भाषा का कम-अधिक मात्रा में प्रयोग किया जाता है। साथ ही साहित्य में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है। सर्वेश्वर जी इससे अपवाद नहीं हैं। इन्होंने विवेच्य उपन्यासों में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है। वे इस प्रकार हैं - 'रजिस्टर'[1], 'पाउडर'[2], 'टाउन'[3], 'प्रमोशन'[4], 'होस्टल'[5], 'डायरी'[6], 'फीस'[7], 'ट्यूशन'[8], 'इंस्पेक्टर'[9], 'स्टूल'[10], 'ड्रिंक'[11], 'एक्सप्रेस'[12], 'मैनेजर'[13], 'स्केच'[14], 'आफिस'[15], 'ड्यूटी'[16], 'ट्रेन'[17], 'गार्ड'[18] आदि।

अतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वर जी के विवेच्य उपन्यासों में अंग्रेजी शब्दों की भरमार दिखाई देती है। अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते समय पात्र बिल्कुल सहजता के साथ स्पष्ट होते हैं।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 7
2. वही, पृ. 13
3. वही, पृ. 17
4. वही, पृ. 25
5. वही, पृ. 41
6. वही, पृ. 45
7. वही, पृ. 49
8. वही, पृ. 52
9. वही, पृ. 56
10. वही, पृ. 58
11. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 10
12. वही, पृ. 11
13. वही, पृ. 13
14. वही, पृ. 35
15. वही, पृ. 37
16. वही, पृ. 40
17. वही, पृ. 42
18. वही, पृ. 43

5.1.1.4.4 संस्कृत शब्द -

विवेच्य उपन्यासों में अरबी, फारसी, अंग्रेजी शब्दों के साथ-साथ संस्कृत के भी शब्द अधिकांश रूप में मिलते हैं। सर्वेश्वर जी के विवेच्य उपन्यासों में प्रस्तुत संस्कृत शब्द के उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं- 'मंदिर'[1], 'कातर'[2], 'सूर्य'[3], 'नमस्ते'[4], 'हर्ष'[5], 'कायस्थ'[6], 'नगन्य'[7], 'पराजय'[8], 'कीट'[9], 'तिरोहित'[10], 'अनुनय'[11], 'जल'[12], 'दर्शन'[13], 'सिंदूर'[14], 'नदी'[15], 'प्रबंध'[16], 'अभास'[17], 'अन्यमनस्क'[18] आदि।

अतः कहना होगा कि संस्कृत शब्दों के कारण विवेच्य उपन्यासों की भाषा में स्वभाविकता दृष्टिगोचर होती है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 6
2. वही, पृ. 9
3. वही, पृ. 16
4. वही, पृ. 17
5. वही,पृ. 22
6. वही, पृ. 30
7. वही, पृ. 46
8. वही, पृ. 52
9. वही, पृ. 63
10. वही, पृ. 75
11. वही, पृ. 84
12. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 9
13. वही, पृ. 12
14. वही, पृ. 15
15. वही, पृ. 16
16. वही, पृ. 22
17. वही, पृ. 27
18. वही, पृ. 33

5.1.1.5 अन्य शब्द -

भाषा में सहजता, स्वभाविकता और पात्रानुकूलता की दृष्टि से सर्वेश्वर जी ने अन्य अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। इसमें ध्वन्यार्थक, निरर्थक, पुनरूक्ति और संयुक्त आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। इनका विस्तार से विवेचन विश्लेषण इस प्रकार है-

5.1.1.5.1 ध्वन्यार्थक शब्द -

लेखक वातावरण की यथार्थ स्थिति का चित्रण करने के लिए ध्वन्यार्थक शब्दों का प्रयोग करता है। इसके बारे में कुसुम शर्मा की मान्यता है कि "वातावरण में सजीवता तथा चित्रात्मकता लाने के लिए कई ध्वनियों को शब्दों के माध्यम से उपन्यास में उतारने का प्रयास किया जाता है। लहजा या टोन उभारने के लिए ध्वन्यात्मकता का प्रयोग किया जाता है।"[1]

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में ध्वन्यार्थक शब्द मिलते हैं। जैसे- कुएँ की चरखी की आवाज- 'मेऊँ-चेऊँ-मेऊँ', रोने की आवाज- 'ऐं-ऐं', रेल गाडी की आवाज- 'खटरपटपट - खटरपटपट', बैलों की घंटियाँ- 'टुन - टुन' आदि ध्वन्यार्थक शब्दों का प्रयोग सर्वेश्वर जी ने मार्मिकता से किया है।

5.1.1.5.2 निरर्थक शब्द -

भाषा में सहज स्वभाविक प्रवाहता लाने के लिए निरर्थक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त निरर्थक शब्द इस प्रकार से हैं - 'मैले कुचैले', 'कहानी-वहानी', 'पूछने-ताछने', 'उलटती-पुलटती', 'लेकिन-वेकिन', 'माल-मता', 'उबड़-खाबड़' आदि निरर्थक शब्दों का प्रयोग मिलता है।

5.1.1.5.3 द्विरूक्त शब्द -

भाषागत सौंदर्य की अभिवृद्धि के लिए प्रायः द्विरूक्त शब्दों का प्रयोग किया जाता है। सर्वेश्वर जी कृत 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में प्रयुक्त द्विरूक्त

---

1. कुसुम शर्मा - साठोत्तर हिंदी उपन्यास : विविध प्रयोग, पृ. 184

शब्द भाषा को सहज प्रभावी बनाने में सहायक हुए हैं। जैसे - 'सिकुड़ती-सिकुड़ती', 'बीच-बीच', 'जल्दी-जल्दी', 'दूर-दूर', 'शुरू-शुरू', 'बड़े-बड़े', 'जुग-जुग', 'नीची-नीची', 'हरे-हरे', 'उतरतें-उतरतें', 'आते-आते', 'रोम-रोम', 'छोटे-छोटे', 'तरह-तरह', 'अकेले-अकेले', 'किए-किए', 'जोड़-जोड़', 'आगे-आगे', 'उछल-उछल', 'मजाक-मजाक', 'नस-नस', 'अपने-अपने' आदि।

अतः कहना सही होगा कि द्विरूक्त शब्द भाषा के सौंदर्य को प्रभावशाली बनाने में महत्त्वपूर्ण स्थान है। द्विरूक्त शब्दों के प्रयोग विवेच्य उपन्यासों में दिखाई देते हैं।

5.1.5.4 संयुक्त शब्द -

विवेच्य उपन्यासों में ध्वन्यार्थक शब्द, निरर्थक शब्द, द्विरूक्त शब्द आदि के साथ-साथ संयुक्त शब्द भी परिलक्षित होते हैं। सर्वेश्वरदयाल सक्सेन ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में संयुक्त शब्दों का प्रयोग किया है। विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त संयुक्त शब्दों के उदाहरण इस प्रकार हैं - 'इक्के-दुक्के', 'हल-चाल', 'ऊँचे-नीचे', 'लड़ने-झगड़ने', 'बाप-दादे', 'दिन-रात', 'हिसाब-किताब', 'चढाव-उतार', 'इधर-उधर', 'हमारे-तुम्हारे', 'माँ-बाप', 'भाई-बहन', अगल-बगल, इज्जत-आबरू, 'भीतर-बाहर', 'आने-जाने', 'उलटे-सीधे', 'छोटी-मोटी', 'भाग छौड़' आदि।

अतः कहना अवश्य होगा कि सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में संयुक्त शब्दों का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। भाषा में प्रवाहता, सरलता तथा स्वाभाविकता लाने के लिए संयुक्त शब्दों को प्रस्तुत किया जाता है।

निष्कर्षतः कहना गलत नहीं होगा कि सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दों का बड़ी मार्मिक ढंग से चित्रण किया है। जहाँ आवश्यकता लगी वहीं पर विविध शब्द प्रयोग करने में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना सफल हुए हैं।

5.1.2 भाषा सौंदर्य के साधन -

साहित्यिक रचना की सार्थकता उसमें व्यक्त विचारों और भावों को सहज, सुंदर तथा आकर्षक ढंग की अभिव्यक्ति पर होती है। इस कारण अभिव्यक्ति को सुंदर और आकर्षक बनाने के लिए भाषा के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में भाषा-सौंदर्य के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया है। जैसे- आवेशात्मक भाषा, उपदेशात्मक भाषा, पात्रानुकूल भाषा, गालियों से युक्त भाषा, व्यंग्यात्मक भाषा, मुहावरे-लोकोक्तियों से युक्त भाषा आदि साधनों के द्वारा सर्वेश्वर जी विवेच्य उपन्यासों को प्रस्तुत किया है। अतः हम भाषा के उक्त उपकरणों का विवेचन-विश्लेषण करेंगे -

5.1.2.1 आवेशात्मक भाषा -

आवेशात्मक भाषा ओजगुण से युक्त भाषा को कहते हैं। लेखक अपने साहित्य के द्वारा पात्रों को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि जो अन्याय-अत्याचार से, प्रेम की असफलता से तथा परंपराओं के विरोध में आवेशात्मक रूपधारण करते हैं। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने 'सूने चौखेटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में आवेशात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

'सूने चौखटे' उपन्यास में आवेशात्मक भाषा का उदाहरण द्रष्टव्य होता है। विवेच्य उपन्यास में कमला की सौतेली माँ पुराने विचारों को ढोती है। इस कारण वह कमला की शिक्षा रोकना चाहती है। वह कमला की शादी के बारे में पति से बार-बार टोकती है। किंतु पति द्वारा उसकी बातों का खंडन होता है। इस समय कमला की सौतेली माँ आवेश में कहती है- "तो मुझे मेरे घर पहुँचा दो। मैं इतनी ज्यादती नहीं बरदाश्त कर सकती।"[1] उक्त कथन से आवेशात्मक भाषा का प्रयोग स्पष्ट होता है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में आवेशात्मक भाषा पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती है। विवेच्य उपन्यास में किशोर स्वार्थी प्रेमी है। वह अपनी स्वार्थ की पूर्ति के बाद आर्थिक

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 41

परिस्थितियों का कारण बताकर प्रेमिका रतना को वापस जाने की सलाह देता है। इस समय रतना आवेश में किशोर को कहती है- "इस एक सप्ताह में कितनी परिस्थितियाँ बदल गई ? बाहर से कहीं कुछ नहीं बदला, तुम्हारे मन के भीतर कुछ बदल गया है, बदला हुआ नजर आता है। अच्छा हुआ यह सब अभी से स्पष्ट नजर आ गया। अभी से अगर यह हाल है तो आगे क्या होगा ? तुमने मुझे धोखा दिया है, गहरा धोखा दिया है।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रतना सच्चे मन से किशोर से प्यार करती है, परंतु किशोर की पलायनवादी वृत्ति को देखकर आवेशात्मक रूप में किशोर से बातें करती है।

निष्कर्षतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वर जी के विवेच्य उपन्यासों में आवेशात्मक भाषा कम-अधिक रूपों में इंगित होती है।

5.1.2.2 उपदेशात्मक भाषा -

उपदेश किसी एक मित्र द्वारा दूसरे मित्र को तथा गुरु द्वारा अपने शिष्य को दिया जाता है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने विवेच्य उपन्यासों में उपदेशात्मक भाषा का प्रयोग बड़ी मार्मिक दृष्टि से किया है। वह निम्न रूपों में दृष्टिगोचर होता है -

'सूने चौखटे' उपन्यास में उपदेशात्मक भाषा के उदाहरण दिखाई देते हैं। विवेच्य उपन्यास में हेम दीदी कमला को उपदेशात्मक भाषा में लिखती है- "हर विगत जीवन केचुल होता है, जिसे उतारकर आगे बढ़ना धर्म है। हर वह कार्य जिससे जीवन गतिमय हो सत्य है, जिससे जड़ हो जाय वह असत्य है। पीछे घूमकर तभी तक देखना चाहिए जब तक आगे बढ़ने की शक्ति मिलती हो। मील के पत्थर यात्रा के माप होते हैं, मंजिल नहीं। उनके छूटने का मोह न कर।"[2] उक्त हेम दीदी के कथन से उपदेशात्मकता दिखाई देती है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी उपदेशात्मक भाषा पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर होती है। विवेच्य उपन्यास में एक मित्र द्वारा दूसरे मित्र को, पति द्वारा पत्नी को तथा प्रेमी द्वारा

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 23
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 90

प्रेमिका को आदि पात्रों द्वारा उपदेशात्मकता का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है। उपदेशात्मक भाषा का उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य होता है। प्रस्तुत उपन्यास में दिनेश मित्र किशोर को कहता है कि "हर मुहब्बत का एक आधार होता है, चाहे वह रूप हो चाहे यश, चाहे धन, चाहे कुछ और भी। और उस आधार के हटते ही मुहब्बत खत्म हो जाती है। इसलिए मुहब्बत को विवाह के खूँटे से बाँधना बहुत जरूरी है।"[1]

अंत में कहना गलत नहीं होगा कि सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में पात्रों के माध्यम से उपदेशात्मक भाषा को प्रस्तुत किया है।

5.1.2.3 पात्रानुकूल भाषा -

रचनाकार अपने कथा-साहित्य को प्रभावपूर्ण, रोचक और गतिशील बनाने एवं चरित्र विशेष के व्यक्तित्व को उभारने के लिए पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करता है। सर्वेश्वर जी इस भाषा से अपवाद नहीं हैं। इन्होंने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में विविध क्षेत्रों के पात्रों की पात्रानुकूल भाषा का मार्मिक चित्रण किया है। वह इस प्रकार से है-

'सूने चौखटे' उपन्यास में पात्रानुकूल भाषा के उदाहरण यहाँ परिलक्षित होते हैं। जैसे- कमला की भाषा में विवशता है। रामू की भाषा में आदर्शवादिता एवं सहानुभूति है। गूँगा माली की भाषा में सांकेतिकता है। मास्टरनी हेम दीदी की भाषा में पश्चातापदग्धता है। अशिक्षित पात्रों में अंधी नानी की भाषा बड़ी ही आकर्षक और मार्मिक है। एक दिन बीमारी के कारण कमला अंधी नानी को ज्यादा काम न करने की सलाह देती है। इस वक्त अंधी नानी कमला से कहती है- "तब तो और घुन लग जाएगा बिटिया ! यहाँ कौन किसका है ? काम के सभी साथी हैं। काम सभी को प्यारा है, चाम नहीं। पता नहीं कैसे एक मसल है बिटिया, बाप-दादे कहते आए हैं- काम करते समय अपने शरीर को दूसरे का शरीर समझो। उससे मोह क्या ?"[2]

'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी पात्रानुकूल भाषा दिखाई देती है। इसका उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य होता है। जैसे- विभा की भाषा में कामुकता है। राजेश की भाषा में असंतोष

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 21
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 34-35

है। रतना की भाषा में सामंती संस्कार है। किशोर की भाषा में पलायनवादीता है। दिनेश की भाषा में स्पष्टवादीता है। बूढ़ा पहरेदार की भाषा में समाज सुधारवादीता है। विभा स्वप्न में प्रेमी मोहन से मिलती है, परंतु मोहन एका-एक जाने को तैयार होता है उस समय विभा कहती है- ''तुमने चाय तक नहीं पी, मुझे अकेले छोड़कर चुपचाप कहाँ चले जा रहे हो।''[1]

अतः कहना होगा कि पात्रानुकूल भाषा से भाषा के सौंदर्य की सुंदरता अधिक ही बढ़ी है। इससे पात्रों के परिवेश का रूप मिलता है।

5.1.2.4 गालियों से युक्त भाषा -

भाषा की यथार्थता की पहचान तब होती है जब लेखक का अपनी भाषा पर अधिकार होता है। लेखक ने पात्रों की मानसिकता को प्रकट करने के लिए विवेच्य उपन्यासों में गालियों का प्रयोग काफी मात्रा में किया हुआ दिखाई देता है। सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास में गालियों का प्रयोग बड़े साहस से किया है। विवेच्य उपन्यास में कमला की सौतेली माँ कमला को बाहर घुमने-फिरने पर पाबंदी लगाती है। वह कमला को कहती है- ''इतनी बड़ी हो गई, न घर काम न काज। किसी भी काम में तो हाथ बँटाया कर। तेरे इतनी बड़ी लड़कियाँ तो चुल्हा-चक्की सब कर लेती हैं। एक तू है चुड़ैल। डूब मर चुल्लू-भर पानी में।''[2] अतः कहना आवश्यक नहीं है कि सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' उपन्यास में गालियों से युक्त भाषा का प्रयोग किया है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी गालियों का प्रयोग मिलता है। इसका उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है। तारवाले के द्वारा बूढ़े पहरेदार को गालियाँ सुननी पड़ती हैं। जैसे- ''बूढ़े साले, अफीम के नशे में पड़े मरते रहते हैं। खुदा ऐसों की भी रोजी सलामत रक्खे हुए हैं।''[3] उक्त कथन से तारवाले द्वारा बूढ़े पहरेदार के बारे में अपशब्दों का प्रयोग मिलता है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 15
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 12
3. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 37

अतः कहना होगा कि सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में गालियों से युक्त भाषा का प्रयोग बड़ी मार्मिकता से किया है। इनमें 'चुड़ैल', 'साले', 'नीच' आदि अपशब्दों का प्रयोग विवेच्य उपन्यास में कम-अधिक मात्रा में परिलक्षित होता है। विवेच्य उपन्यासों में गालियों से युक्त भाषा पात्रों एवं प्रसंगों के अनुकूल होने के कारण वे उपन्यास की गरीमा को बढ़ाती है।

5.1.2.5 व्यंग्यात्मक भाषा -

व्यंग्यात्मक भाषा में उपन्यासकार अपने उपन्यासों को विवरण की जगह व्यंजना पर अधिक भर देता है। इसके बारे में डॉ. प्रदीप शर्मा लिखते हैं- ''लेखक यथार्थ को सीधे-सीधे व्यक्त न करके व्यंजना के सहारे अभिव्यक्ति प्रदान करता है। समाज की सामयिक स्थितियों, परिस्थितियों, दशाओं और उसकी अच्छाइयों-बुराइयों को वह प्रतीकात्मक ढंग पर या सीधे व्यंग्य के द्वारा व्यंजित करता है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग यथार्थ की जगह करता है। सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में कम-अधिक मात्रा में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। इस बारे में डॉ. विजय प्रकाश मिश्र की मान्यता है- ''आधुनिक हिंदी साहित्य में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना अपनी व्यंग्यपूर्ण रचनाओं, सामाजिक सुधार एवं जनजागरण की भावना पर आधारित कृतियों के लिए सुविख्यात है।''[2] अतः कहना होगा कि सर्वेश्वर जी बहुमूखी प्रतिभाशाली रचनाकार हैं।

'सूने चौखटे' उपन्यास में व्यंग्यात्मक भाषा की भरमार अधिक मात्रा में परिलक्षित होती है। विवेच्य उपन्यास में लाला बालेदीन रामू और कमला को व्यंग्यपूर्ण भाषा में समझाते हैं- ''तुम दोनों समझदार हो। लेकिन दुनिया तुम्हें समझदार नहीं रहने देगी, क्योंकि वह अपने को तुम दोनों से ज्यादा समझदार मानती है।''[3] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने समाज को व्यंग्यात्मक भाषा द्वारा प्रस्तुत किया है।

---

1. डॉ. प्रदीप शर्मा - हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधान, पृ. 296
2. डॉ. विजयप्रकाश मिश्र - हिंदी के प्रतिनिधि कवि, पृ. 300
3. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 59

'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी व्यंग्यात्मक भाषा का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यासों में जनक्रांति का नेता प्रकाश पार्टी-ऑफिस में किसी ने आग लगाने से हताश होता है। इस कारण प्रकाश अपने सहयोगी से पार्टी-ऑफिस के लिए सहायता चाहता है। इस समय सहयोगी प्रकाश को व्यंग्यात्मकता से कहता है- "इसीलिए कहता था बेटा, इंसान को भीतर से बदलने दो, बाहर के बदलने से कोई काम नहीं चलेगा। कल फिर आग लग गई तो ?"[1]

अतः कहना गलत नहीं होगा कि सर्वेश्वर जी के विवेच्य उपन्यासों में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग कम-अधिक मात्रा में क्यों न हो, लेकिन मिलता है। इससे भाषा में सहजता और सुंदरता के साथ-साथ कथानक को गति भी मिलती है।

5.1.2.6 मुहावरे -

लेखक भाषा को सजीवता और प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करता है। इसके बारे में अमी आधार 'निडर' लिखते हैं- "मुहावरा उनवाक्यांश या खंड खंड वाक्य को कहते हैं जिनका अर्थ उस भाषा में साधारण या सीधा न होकर विलक्षण या वैचित्र्यपूर्ण हो। मुहावरा भाषा का विशिष्ट प्रयोग है जिसे लाक्षणिक प्रयोग कहा जाता है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में कसावट, चमत्कारिकता, विलक्षणता आती है। मुहावरा भाषा के लिए संजीवनी रूप होता है। मुहावरा पदबंध होता है। अतः स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त नहीं होता। मुहावरे की सार्थकता किसी वाक्य का अंग बन जाने में होती है।"[2] अतः मुहावरे भाषा को विशिष्ट अर्थ देते हैं तथा भाषा को प्रभावी बनाने का काम करते हैं।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी के 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में प्रयुक्त मुहावरे इस प्रकार हैं- 'सिर पर सवार होना'[3], 'टाँग तोड़ना'[4], 'जी छोटा करना'[5], 'घूँघट

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 37
2. अमी आधार 'निडर' - समाचार संकलन एवं अनुवाद, पृ. 110-111
3. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 8
4. वही, पृ. 12
5. वही, पृ. 36

काढ़ना'[1], 'नाक की सीध में'[2], 'गुलछर्रे उड़ाना'[3], 'मिट्टी पलीद होना'[4], 'पिंड छुड़ाना'[5], 'सिर पर मढ़ना'[6], 'सिर पटकना'[7], 'दृष्टि बांधना'[8], 'सिर थामना'[9], 'फूट-फूटकर रोना'[10], 'ताना मारना'[11], 'ऊँगली उठाना'[12] आदि।

निष्कर्षतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वर जी के उपन्यासों में मुहावरों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। मुहावरों का यथोचित प्रयोग कर सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी ने अपनी भाषा सौंदर्य को गरिमा प्रदान की है।

5.1.2.7 लोकोक्तियाँ -

लोकोक्तियों को कहावते भी कहा जाता है। लोकोक्ति गागर में सागर भरने का विशेषता कार्य करती है। इनमें जीवन के तथ्य को बड़ी खुबी से स्पष्ट किए जाते हैं। इसके बारे में डॉ. धीरेंद्र वर्मा की मान्यता है- "लोकोक्तियाँ मानवी ज्ञान के घनीभूत रत्न हैं, जिनमें बुद्धि और अनुभव की किरणें फूटनेवाली ज्योति प्राप्त होती हैं।"[13] अतः कहना आवश्यक नहीं कि लोकोक्तियों तथा कहावतों का संबंध मानवी मन से होता है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 38
2. वही, पृ. 40
3. वही,पृ. 40
4. वही, पृ. 56
5. वही, पृ. 59
6. वही, पृ. 59
7. वही, पृ. 60
8. वही, पृ. 92
9. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 13
10. वही, पृ. 14
11. वही, पृ. 18
12. वही, पृ. 23
13. डॉ. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोश, भाग 1, पृ. 754

सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में लोकोक्तियों का प्रयोग स्वाभाविकता से किया है। उनके विवेच्य उपन्यासों में लोकोक्तियों की भरमार कम मात्रा में दिखाई देती है। जैसे- 'आगे नाथ न पीछे पगहा'[1], 'चुल्लु भर पानी में डूब मरना'[2], 'हिम्मते मरदां, मददे खुदा'[3], आदि।

अतः कहना होगा कि सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में कहावते तथा लोकोक्तियों का प्रयोग करते हुए भाषा की प्रभावशालीता पर ध्यान दिया है।

5.2 शैली -

शैली का संबंध रचना के साथ-साथ रचनाकार से भी होता है। इसी कारण रचनाकार का अनुभव, शिक्षा, संस्कार, परिवेश तथा रुचि आदि का रचना के निर्माण में विशेष महत्त्व होता है। शैली में रचनाकार का व्यक्तित्व ही समाहित रहता है। सर्वेश्वर जी इससे अपवाद नहीं हैं। इनके 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में विविध शैली के भेद परिलक्षित होते हैं। परंतु इससे पहले हमें शैली का अर्थ तथा परिभाषा को देखना आवश्यक होगा। वह इस प्रकार -

5.2.1 शैली का अर्थ -

सामान्यतः विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की पद्धति को शैली कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे 'स्टाईल' (Style) कहा जाता है। शैली के बारे में डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त की मान्यता है कि " 'शैली' शब्द संस्कृत के शील से व्युत्पन्न है। 'शीलम्' के अनेक अर्थ हैं, यथास्वभाव, लक्षण, झुकाव, उदात्त चरित्र आदि। शैली का अंग्ल पर्याय 'स्टाइल' (Style) है जो कि लॅटिन भाषा के 'स्टाइलॅस' (Stylus) से व्युत्पन्न है। स्टाइलॅस का अर्थ है- लिखने की नोकदार कलम। आगे चलकर इसके समानार्थक 'स्टाइल' के अनेक अर्थ विकसित हो गए जिनमें

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ.
2. वही, पृ. 12
3. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 19

से कुछ ये हैं - लिखने का ढंग, लिखित रचना, लेखक की अभिव्यक्ति या वैशिष्ट्य, साहित्यिक रचना की रूपगत विशेषताएँ, बोलने का लहजा, रीति या प्रथा, किसी कलाकार की रचना-पद्धति की विशिष्टता।''[1]

अतः कहना सही होगा कि शैली शब्द रीति, पद्धति, तरीका, प्रणाली रिवाज तथा वाक्य रचना का ढंग आदि अर्थों से युक्त होता है।

5.2.2 शैली की परिभाषा -

शैली आधुनिक युग की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी विधि है, जो प्राचीन वस्तु को नवीन परिवेश में प्रस्तुत कर सकती है। शैली को अनेक विद्वानों ने परिभाषित किया है। 'शैली' की परिभाषा इस प्रकार है-

1. डॉ. श्यामसुंदर दास -

डॉ. श्यामसुंदर दास शैली के बारे में कहते हैं- ''किसी कवि या लेखक की शब्दयोजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और उनकी ध्वनि आदि का नाम शैली है।''[2] इससे यह स्पष्ट होता है कि किसी रचनाकार की शब्द योजना, वाक्य योजना तथा ध्वनि का दूसरा नाम शैली है।

2. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र -

डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र शैली के बारे में लिखते हैं- ''वास्तव में भावाभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है और उस माध्यम के प्रयोग की रीति या विधि शैली है।''[3]

3. डॉ. गुलाबराय -

डॉ. गुलाबराय जी के अनुसार- ''शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।''[4]

---

1. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त - हिंदी भाषा एवं साहित्य विश्वकोष, पृ. 699
2. डॉ. श्यामसुंदरदास - सीहत्य लोचन, पृ. 95
3. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृ. 34
4. डॉ. गुलाबराय - सिद्धांत और अध्याय, पृ. 180

अतः कहना सही होगा कि रचनाकार अपने मन की भावाभिव्यक्ति को किसी विशेष रीति या पद्धति से स्पष्ट करता है, उस रीति या पद्धति को शैली कहा जाता है।

5.2.3 विवेच्य उपन्यासों में चित्रित विविध शैलियों का प्रयोग -

शैली को अंग्रेजी में 'स्टाइल' (Style) कहा जाता है। शैली लेखक के अनुभवों को अभिव्यक्त करने का प्रमुख साधन है। शैली रचनाकार के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है, क्योंकि शैली के अभाव में रचना की प्रस्तुति संभव नहीं होती। इसके द्वारा लेखक कोई भी विषय को यथार्थ रूप में स्पष्ट करता है। वस्तुतः किसी भी औपन्यासिक रचना में किसी एक ही शैली का प्रयोग नहीं होता। कथ्य की माँग के अनुसार उपन्यासकार विविध शैलियों का प्रयोग करता है। यथार्थवादी रचनाकार सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में शैली के विविध प्रकारों को प्रस्तुत किया है। जिसमें- प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक, प्रश्नोत्तर, गीतात्मक, सांकेतिक, मनोवैज्ञानिक, संवाद, स्वप्न और पूर्व दीप्ति आदि शैलियों के भेद विवेच्य उपन्यासों में दिखाई देते हैं। अब हम विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त शैलियों का विवेचन-विश्लेषण करेंगे -

5.2.3.1 प्रतीकात्मक शैली -

'प्रतीक' शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रति + इक' से हुई है। जिसका अर्थ है कि किसी की ओर झुका हुआ होता है। जब सादृश्य की वजह से कोई वस्तु किसी अन्य वस्तु को प्रतिपादन करती है, तो उसे प्रतीक कहा जाता है। प्रतीक के बारे में धीरेंद्र वर्मा लिखते हैं- ''किसी अन्य स्तर की समानुरूप वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय प्रतिनिधित्व करनेवाली वस्तु प्रतीक है।''[1] अतः कहना स्पष्ट होता है कि प्रतीक किसी वस्तु को दिखाने के लिए उसके स्थान पर अन्य रूपों या वस्तु के द्वारा दिखाया जाता है। अर्थात किसी वस्तु के स्थान पर अन्य वस्तु को प्रस्तुत करना ही प्रतीक है। रचनाकार प्रतीक का प्रयोग रचना में करता है इस पद्धति को प्रतीकात्मक शैली कहा जाता है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में इसी शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में मिलता है।

---

1. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोष, भाग- 1, पृष्ठ - 515

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सूने चौखटे' उपन्यास में प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका कमला मुहल्ले की अंधी नानी की मृत्यु पर कहती है- ''और सत्तर वर्ष तक अपनी इसी दृढ़ आस्था के द्वारा श्रम की इस बंजर धरती पर वह जो कुछ उगा सकी थी, वह एक पुरानी साफ धोती का कफ़न था।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि सर्वेश्वर जी ने आंधी नानी के पीड़ादायी जीवन को प्रतीकात्मक शैली के द्वारा प्रस्तुत किया है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सोया हुआ जल' उपन्यास में प्रतीकात्मक शैली की भरमार अधिक मात्रा में दिखाई देती है। सर्वेश्वर जी का यह प्रतीकात्मक शैली में लिखा लघु-उपन्यास है।

प्रस्तुत उपन्यास में बूढ़ा पहरेदार ताल के किनारे स्थित यात्रीशाला की पहरेदारी करता है। इस वक्त वह यात्रीशाला के कमरों की अवाज सुनता है। जो कि ''उसके कानों में विभिन्न कमरों से आते हुए ये अधुरी बातों के टुकड़े, किसी तेज़ बवंडर में पड़े पीपल के सूखे पत्तों की तरह चक्कर काट रहे थे और उसके मस्तिष्क की फटती रगों से, ये तरह-तरह की आवाजें, शोरगुल, कहकहे, समुद्र की लहरों की तरह टकराते जा रहे थे।''[2] उक्त कथन में प्रतीकात्मक शैली दिखाई देती है। विवेच्य उपन्यास में 'यात्रीशाला' इस दुनिया का प्रतीक है और 'पहरेदार' सुधारकों का प्रतीक है।

निष्कर्षतः कहना गलत नहीं होगा कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के उपन्यासों में प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग कम-अधिक मात्रा में दिखाई देता है। सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों के शीर्षक भी प्रतीकात्मक शैली में दिए हैं।

5.2.3.2 वर्णनात्मक शैली -

इस शैली को व्याख्यात्मक या इतिवृत्तात्मक शैली भी कहा जाता है। प्राचीन काल से यह शैली प्रचलित रही है। रचनाकार कथानक को रोचक तथा सुगठित बनाने के लिए विविध

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 35
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 10

घटनाओं का वर्णन करता है। वर्णनात्मक शैली के बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं- ''उपन्यासकार तृतीय पुरुष के रूप में कथा को विस्तार देता है, जो कुछ वह लिखना चाहता है, उसे वर्णनात्मक शैली में लिखता है।''[1] विवेच्य उपन्यासों में वर्णनात्मक शैली दृष्टिगोचर होती है। वह निम्नतः -

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के 'सूने चौखटे' उपन्यास में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास में सर्वेश्वर जी ने लाला बालेदीन के पोशाक का वर्णन बड़ी मार्मिक दृष्टि से किया है। जैसे- ''लाला बालेदीन की मूँछे सफेद थीं। सिर पर एक गंदी दुपलियां टोपी थी, गले में एक पुराना बुना हुआ भूरे रंग का मफलर, एक काली जाकेट जिसमें एक भी बटन नहीं था।''[2] उक्त कथन से वर्णनात्मक शैली परिलक्षित होती है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना कृत 'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी वर्णनात्मक शैली दृष्टिगोचर होती है। विवेच्य उपन्यास में सर्वेश्वर जी ने किशोर के विवाह का वर्णन किया है। वे इस संदर्भ में लिखते हैं- ''किशोर एक खुली हुई मोटर में दूल्हा बना बैठा था। शहनाइयाँ बज रहीं थीं। आने-जानेवाले फूल, गुलाब-जल और इत्र बरसा रहे थे। दिनेश शराब पिये, लड़खड़ाता हुआ आगे-आगे चल रहा था। लोग उसे झुक-झुककर प्रणाम कर रहे थे।''[3] अतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वर जी ने किशोर के विवाह को वर्णनात्मक शैली के द्वारा चित्रण किया है।

निष्कर्षतः कहना गलत नहीं होगा कि विवेच्य उपन्यासों में सर्वेश्वरजी ने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में किया है।

5.2.3.3 प्रश्नोत्तर शैली -

इस शैली का प्रयोग रचनाकार अपनी रचना में सवाल और जवाब के रूप में करता है। सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में प्रश्नोत्तर शैली का विवेचन किया है।

---

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास, पृ. 91
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 8
3. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 29

'सूने चौखटे' उपन्यास में प्रश्नोत्तर शैली के उदाहरण यहाँ परिलक्षित होते हैं। विवेच्य उपन्यास की नायिका कमला एक दिन समय निकालकर रामू, हेम दीदी और सीता को चिठ्ठियाँ लिखती है। वह अपनी शादी के बारे में तीनों को आमंत्रित करती है। उसके दूसरे ही दिन पत्र के उत्तर में हेम दीदी आ जाती है। हेम दीदी आते ही कमला से कहती है -

" 'तू गाँव से कब आई ?' हेम दीदी ने पैर रखते ही प्रश्न किया।

'कोई पंद्रह दिन हुए।'

'फिर इतने दिन तूने खबर क्यों नहीं दी ?'

'जी अच्छा नहीं था, शरीर भी रोगी था।'

'अब कैसी है तू ?'

'देख तो रही हो, शायद अच्छी हूँ।' "[1]

अतः कहना होगा कि हेम दीदी और कमला के संवादों को सर्वेश्वर जी ने प्रश्नोत्तर शैली के द्वारा प्रस्तुत किया है। इस शैली से कथानक आगे बढ़ता है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी प्रश्नोत्तर शैली का मार्मिक चित्रण मिलता है। विवेच्य उपन्यास में किशोर प्रेमिका रतना की उच्चवर्गीयता को बार-बार टोकता है। वह अपनी गरीबी की भी दुहाई प्रेमिका रतना को देता है, क्योंकि वह प्रेमिका रतना से अपनी स्वार्थ सिद्धि पूरी करता है। इस समय प्रेमिका रतना किशोर को कहती है-

" 'अपनी गरीबी का यह ख्याल पहले क्यों नहीं आया था तुम्हें ?'

'तब मैं यह ख्याल करने को मजबूर नहीं था।'

'अब क्यों मजबूर हो गये, क्या मैंने कर दिया ?'

'नहीं, तुमने नहीं, परिस्थितियों ने।' "[2]

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 76

2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 23

उक्त कथन में प्रश्नोत्तर शैली दिखाई देती है। निष्कर्षतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने विवेच्य उपन्यासों में प्रश्नोत्तर शैली का मार्मिक रूप में प्रयोग किया है। इस शैली द्वारा भाषा में प्रवाहता तथा गतिशीलता विवेच्य उपन्यासों में दिखाई देती है।

5.2.3.4 गीतात्मक शैली -

लेखक भाषा में सरलता तथा सरसता लाने के लिए गीतात्मक शैली का प्रयोग करता है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जी मूलतः कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। इस कारण इनके 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में गीतों की भरमार दिखाई देती है।

'सूने चौखटे' उपन्यास में गीतात्मक शैली पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती है। विवेच्य उपन्यास में कमला अपनी स्मृतियों को जगाने के लिए प्रेमी रामू के हाथ में अपने गहने रखती है। इस समय रामू कमला के गहनों पर मस्तक और आँखें टिका देता हुआ कहता है-

"शीतल है स्पर्श
सलोनी कान्ति है
सुखद है सान्निध्य
अलौकिक शांति है।"[1]

उक्त कथन से गीतात्मक शैली स्पष्ट होती है।

सर्वेश्वर कृत 'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी गीतों की भरमार कम-अधिक मात्रा में दिखाई देती है। सर्वेश्वर जी के विवेच्य उपन्यासों में गीतात्मक शैली का उदाहरण दृष्टिगोचर होता है। प्रस्तुत उपन्यास का पात्र दिनेश ताल की सीढ़ियों पर घुमता हुआ गुनगुनाता है -

"फूलों की क्यारियों में,
रात, शराब की खाली बोतल दफन कर गई है,
ताकि नया सबेरा उसे न देख सके।"[2]

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 89
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 47

निष्कर्षतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वर जी को गीतों के प्रति लगाव होने की वजह से इन्होंने विवेच्य उपन्यासों में गीतात्मक शैली का प्रयोग किया है।

5.2.3.5 सांकेतिक शैली -

रचनाकार कथा में प्रवाहता लाने के लिए सांकेतिक शैली का प्रयोग करता है। सांकेतिक शैली वर्णनात्मक शैली के प्रतिकूल मानी जाती है। इसके बारे में डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र लिखते हैं- ''जिसमें विवरण का अनावश्यक विस्तान नहीं रहता और उपन्यासकार एक ऐसा चित्र प्रस्तुत करते हैं जो सांकेतिक होता है।''[1] सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में सांकेतिक शैली का प्रयोग किया है।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना कृत 'सूने चौखटे' उपन्यास में सांकेतिक शैली का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। विवेच्य उपन्यास में गूंगा माली सांकेतिक भाषा में दुःखी कमला को धीरज देता है। इसका उदाहरण इस प्रकार है- ''जब तक मैं हूँ, तब तक तुम्हें घबराने की कोई जरूरत नहीं।''[2] उक्त पंक्ति से स्पष्ट होता है कि गूंगा माली दुःखी कमला को हाथ उठाकर हथेली हिलाकर दुःखी न होने का संकेत करता है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में सांकेतिक शैली अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होती है। विवेच्य उपन्यास की पूरी कथा रात के कुछ घंटों में प्रस्तुत की गई है। इसमें रात की रंगीनी के नहीं, उसकी भयावहता, मूर्दा खामोशी का संकेत दिखाई देता है। जैसे- ''उस समय दूर कहीं बारह के घंटे की आवाज आयी। रात नींद में झुक गई। विद्यूत-स्तंभों का प्रकाश हल्का पड़ गया। परछाइयाँ गहराकर लंबी हो गई।''[3]

अतः कहना होगा कि सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में सांकेतिक शैली का कम-अधिक मात्रा में प्रयोग किया है।

---

1. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृ. 267
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 44
3. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 26

5.2.3.6 मनोवैज्ञानिक शैली -

इस शैली के भीतर कथानक का सूत्र मूलतः पात्रों की विविध मनस्थितियों के द्वारा निर्देशित होता है। इसके बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं- "इसमें केवल किन्ही पात्रों के व्यावहारिक और बाह्य कार्य-कलाप का ही उल्लेख नहीं होता, वरन् उनके मूल चालक-स्त्रोतों तथा मानसिक पृष्ठभूमि का भी विश्लेषण प्रस्तुत करने की चेष्ट की जाती है।"[1] अतः सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में पात्रों की मानसिक पृष्ठभूमि को मनोवैज्ञानिक शैली द्वारा प्रस्तुत किया है।

'सूने चौखटे' उपन्यास में मनोवैज्ञानिक शैली का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में इंगित होता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका कमला की मानसिकता को मनोवैज्ञानिक शैली के द्वारा सर्वेश्वर जी ने प्रस्तुत किया है। कमला अपने बाबूजी से शादी की बातें सुनती है। इस समय कमला की मानसिकता का चित्रण द्रष्टव्य होता है- "कमला को लगा उसके मस्तिष्क में किसी ने गर्म चाकू से नश्तर लगा दिया हो। इस तीखी जलन और पीड़ा के साथ-साथ उसे एक अजीब गुदगुदी-सी महसूस हुई जैसे टपकते हुए कोडे के चारों ओर से होती है।"[2] अतः कहना होगा कि सर्वेश्वर जी ने कमला की मानसिकता का चित्रण मनोवैज्ञानिक शैली द्वारा किया है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में अधिक मात्रा में मनोवैज्ञानिक शैली के उदाहरण द्रष्टव्य होते हैं। इसके बारे में डॉ. माफतलाल पटेल पटेल लिखते हैं- "एक ताल के किनारे स्थित यात्रीशाला के भिन्न-भिन्न दो-तीन कमरों में ठहरे हुए यात्रियों की मनःस्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है।"[3] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि विवेच्य उपन्यास में मनोवैज्ञानिक शैली की भरमार अधिक रूप में दिखाई देती है। विवेच्य उपन्यास में चित्रित मनोवैज्ञानिक शैली का उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य होता है। जैसे- "तुम काम करने में लग गए थे क्या ? बीमार पड़ जाओगे। सोते क्यों

---

1. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास, पृ. 191
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 74
3. डॉ. माफतलाल पटेल - हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, पृ. 201

नहीं हो, तुम भी मेरा कहना नहीं मानते- नहीं मानते न मेरा कहना ? अच्छी बात है। मैं... मैं कभी कुछ नहीं कहुँगी।''[1]

अतः कहना गलत नहीं होगा कि सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में विभा, राजेश, किशोर, रतना, कमला आदि पात्रों को मनोवैज्ञानिक शैली द्वारा प्रस्तुत किया है।

5.2.3.7 संवाद शैली -

रचनाकार अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए रचना में संवाद शैली को प्रस्तुत करता है। संवाद शैली के कारण उपन्यास के कथ्य में नाट्यात्मकता, सजीवता, स्पष्टता एवं रोचकता आ जाती है। पात्रों के संवाद द्वारा उपन्यासकार का व्यक्तित्व भी स्पष्ट होता है। सर्वेश्वर जी ने 'सूने चौखटे' तथा 'सोया हुआ जल' उपन्यासों में संवाद योजना का काफी मात्रा में प्रयोग किया है।

'सूने चौखटे' उपन्यास में संवादों की भरमार अधिक मात्रा में परिलक्षित होती है। विवेच्य उपन्यास में रामू कमला से बड़ा आदमी बनाने की बिनती करता है। इस वक्त कमला रामू पर दया करती है। वह रामू को बड़ा आदमी भी बनाती है। इस समय वह रामू से कहती ह-

'' 'अब तू बड़ा आदमी हो गया है, मेरी भी कोई सुध लेगा ?'

'हाँ, तू जो कहेगी वह मैं करुँगा।' रामू ने विश्वास के साथ कहा।

'झूठ तो नहीं बोलता ?'

'नहीं।'

'सच, जो मैं कहूँगी, वह करेगा ?'

'हाँ।' रामू ने दृढ़ता से कहा।''[2]

उक्त कथन से संवाद शैली का प्रयोग मिलता है।

'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी संवाद शैली की भरमार बड़ी मात्रा में दिखाई देती है। विवेच्य उपन्यास में मोहन और विभा के संवादों का उदाहरण परिलक्षित होता है। इसमें विभा

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल, और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 17
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 29

प्रेमी मोहन के साथ रहना चाहती है, परंतु मोहन परिस्थिति की बिकटता की वजह से विभा को छोड़ना चाहता है। इस कारण मोहन प्रेमिका विभा को नाव से उतरने को कहता है। इनका संवाद यहाँ द्रष्टव्य है -

" 'उतर जाओ।'
'मैं नहीं उतरूँगी।'
'मैं कहता हूँ उतर जाओ।'
'मैं नहीं उतरूँगी। नहीं हरगिज नहीं।'
'तो फिर मैं नदी में कूद पड़ूँगा....।' "[1]

अतः कहना गलत नहीं होगा कि विवेच्य उपन्यासों में सर्वेश्वर जी ने संवाद शैली का प्रयोग किया है।

5.2.3.8 पूर्व दीप्ति शैली -

पूर्व दीप्ति शैली को फ्लैश-बैक शैली के नाम से जाना जाता है। इनमें जीवन की घटनाओं का वर्णन स्मृति-तरंगों के रूप में किया जाता है। इस बारे में डॉ. प्रतापनारायण टंडन लिखते हैं- "उपन्यासकार कथा कहते-कहते अकस्मात प्रसंग के सूत्र को किसी विगत घटना के सूत्र से जोड़ देता है, जिससे कथा की गति विकास की ओर अग्रसर होती है।"[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि रचनाकार पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग अकस्मात् रूप से कथा में आता है। सर्वेश्वर जी ने विवेच्य उपन्यासों में पूर्व दीप्ति शैली को प्रस्तुत किया है।

सर्वेश्वर जी के 'सूने चौखटे' उपन्यास में पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग अधिकांश मात्रा में दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास के कथानक को गति देने का कार्य इस शैली द्वारा किया जाता है। इस शैली के उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य होते हैं। कमला को दो वर्ष पूर्व की एक घटना याद आती है। जिसमें उसे हेम दीदी से परीक्षा के बाद विदा लेनी पड़ी थी। कमला हेम दीदी को गले से

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 16
2. डॉ. प्रतापनारायण टंडन - हिंदी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास, पृ. 198

लगाकर कहती है - ''मैं नहीं जाऊँगी हेम दीदी। मुझे किसी तरह रोक लो। मेरा वहाँ कोई अपना नहीं है। मैं क्या करूँगी, कैसे रहूँगी ? मुझे बचा लो हेम दीदी। क्या मुझे कोई नहीं बचा सकता ?''[1] उक्त कथन से पूर्व दीप्ति शैली दिखाई देती है।

सर्वेश्वर जी ने 'सोया हुआ जल' उपन्यास में भी पूर्व दीप्ति शैली का बहुत बड़ी मात्रा में प्रयोग किया है। विवेच्य उपन्यास का बूढ़ा पहरेदार ताल के किनारे स्थित यात्रीशाला की पहरेदारी करता है। इस समय उसे कमरा नं. 11 की घटना याद आती है- ''उसकी आँखों के सामने घूमती हुई एक लाश आ गई.... कोई अच्छे कपड़े पहने रात में आया था। उसी में टिका था और उसकी लाश छत की कड़ी में झूल रही थी। फिर लाश इसी गैलरी से निकाली गई थी। पुलिस ने उसे कितना हैरान किया था ! उसकी समझ में अभी तक नहीं आया कि वह खुद ही मरा था या किसी ने उसे मार डाला था।''[2] सर्वेश्वर जी की भाषाशैली के संबंध में डॉ. कल्पना अग्रवाल लिखती हैं- ''सर्वेश्वर के उपन्यासों में वर्णनात्मक शैली, भावात्मक शैली, संवाद शैली, मनोवैज्ञानिक शैली आदि का प्रयोग मिलता है। उनकी भाषा शैली में कहीं भी दुरूहता या जटिलता का अनुभव नहीं होता। उनकी भाषा शैली सहज प्रवाहमयी तथा पैनी है। भाषा में सादगी है। नपे तुले शब्दों के द्वारा बोलचाल की भाषा में विचार अभिव्यक्त हुए हैं जो जनसाधारण के लिए ग्राह्य हैं।''[3] अतः कहना आवश्यक होगा कि सर्वेश्वर जी बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार हैं।

अतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वर जी ने उपन्यास साहित्य में पूर्व दीप्ति शैली को मार्मिकता से स्पष्ट किया है।

---

1. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सूने चौखटे, पृ. 68
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना - सोया हुआ जल और पागल कुत्तों का मसीहा, पृ. 19
3. डॉ. कल्पना अग्रवाल - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना व्यक्ति और साहित्य, पृ. 163

निष्कर्ष -

इस प्रकार हम स्पष्टतः कह सकते हैं कि यथार्थवादी साहित्यकार सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का भाषा पर असाधारण अधिकार है। इन्होंने अपने साहित्य के द्वारा जनभाषा का प्रयोग किया है।

भाषा शैली की दृष्टि से सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने रोचक, प्रभावपूर्ण एवं पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने अपनी भाषा को जीत्रंत बनाने के लिए उदारतापूर्वक विभिन्न भाषाओं से शब्द ग्रहण किए हैं। इसमें अरबी, फारसी, अंग्रेजी तथा संस्कृत आदि शब्दों का प्रयोग परिलक्षित होता है। इन्होंने विवेच्य उपन्यासों में जनसाधारण की बोलचाल की भाषा का भी प्रयोग किया है। भाषा को सौंदर्य प्रदान करने के लिए उनके विविध उपकरणों का चित्रण किया है। जैसे- आवेशात्मक, उपदेशात्मक, पात्रानुकूल, गालियों से युक्त, व्यंग्यात्मक, मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ आदि का मार्मिक चित्रण मिलता है। इस रूपों से भाषा में बाधा नहीं आती, तो इससे भाषा सौंदर्य को बढावा ही मिला है। इसके साथ-साथ विवेच्य उपन्यासों में विविध शैलियों के रूप भी इंगित होते हैं। वे इस प्रकार से हैं- प्रतीकात्मक, वर्णनात्मक, प्रश्नोत्तर, गीतात्मक, सांकेतिक, मनोवैज्ञानिक, संवाद तथा पूर्व दीप्ति आदि शैलियों के रूप मिलते हैं।

अतः कहना सही होगा कि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के विवेच्य उपन्यासों की भाषा-शैली सफल मानी जा सकती है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR